युगोस्लाविया–संशोधनवाद के सबक

इस समय युगोस्लाविया नाम एक बहु–राष्ट्रीय देश नहीं रह गया है। यह देश साम्राज्यवादियों की साजिश के कारण कई टुकड़ों में बंट चुका है। इस विघटन में अलग–अलग राष्ट्रीयताओं की प्रतिक्रियावादी शक्तियां साझीदार रही हैं। युगोस्लाविया के विखंडन की नींव बहुत पहले उस समय पड़ गयी थी जब वहां की कम्युनिस्ट पार्टी के शासक गुट ने सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद को त्याग कर युगोस्लावियाई राष्ट्रवाद के आधार पर समाज को ले जाने का रास्ता चुन लिया था। उसने समाजवाद के रास्ते को छोड़ दिया था। वह क्रमशः साम्राज्यवादी व्यवस्था का अंग बनकर युगोस्लाविया में पूंजीवाद की ओर कदम बढ़ा चुका था। युगोस्लाविया के इस शासक गुट के पास कब्जाकारी फासीवादी सेनाओं के विरुद्व छापामार युद्व चलाने की शानदार विरासत थी। इस युद्व के दौरान इसने ''भाईचारा और एकता'' के नारे के तहत विभिन्न राष्ट्रीयताओं के जन–समुदाय को गोलबंद किया था। इसके पास मजदूर वर्ग के संघर्षों की विरासत थी और उसकी हिरावल युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व था। इन कारणों से मार्क्सवाद–लेनिनवाद की साख का इस्तेमाल करते हुए उसमें संशोधन का रास्ता चुनने में इसे मदद मिली और यह उस समय मजदूर वर्ग और व्यापक मेहनतकश आबादी की आंखों में धूल झोंकने में कामयाब हो गया। लेकिन पूंजीवादी रास्ते पर चलने की स्वाभाविक परिणति अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के राष्ट्रवाद के पनपने में होनी ही थी। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी (**1952** के बाद युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग) को संशोधनवादी पार्टी में बदलने की प्रक्रिया का असर युगोस्लाविया के समाज में पड़ना ही था। यह शासक गुट लगातार मार्क्सवाद– लेनिनवाद की माला जपता रहा और इसके विपरीत आचरण करता रहा। इसने मार्क्सवाद–लेनिनवाद से अपनी गद्दारी को ''युगोस्लाविया के समाज का रास्ता'' का नाम दिया।

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी पहली शासक कम्युनिस्ट पार्टी थी जिसने मार्क्सवाद–लेनिनवाद से गद्दारी करके संशोधनवादी दिशा अपनायी थी। इस तरीके से यह खुश्चोव के संशोधनवाद की अगुवाई कर रही थी। प्रस्तुत लेख में हम युगोस्लाविया नाम के देश के अस्तित्व में आने और फासीवाद–विरोधी मोर्चे की युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में विजय हासिल करने तथा नये युगोस्लाविया के जन्म लेने, समाजवाद की दिशा में कदम बढ़ाने व इस पार्टी के संशोधनवादी होने की यात्रा का जिक्र करेंगे। युगोस्लावियाई संशोधनवाद, जिसे टीटोवाद के नाम से भी जाना जाता है, की स्पष्ट समझ इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसने सर्वप्रथम एक समाजवादी देश को पूंजीवादी देश में बदलने का रास्ता तय किया था। इसने ही सर्वप्रथम, साम्राज्यवाद के साथ सांठगांठ करने तथा समाजवादी खेमे के विरुद्व अपनी साजिशें की थीं। यह संशोधनवाद, युगोस्लाविया के मौजूदा विखण्डन का मूल स्रोत था।

I युगोस्लाविया देश का जन्म और उसकी राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति

युगोस्लाविया यानी दक्षिणी स्लाव का एक देश के रूप में गठन प्रथम विश्व युद्व के बाद हुआ था। यह सर्बियाई, क्रोएशियाई, स्लोवेनियाई, मैसेडोनियाई और मोण्टेनेग्रोयाई जनता की दीर्घकालिक आकांक्षाओं और उनके संघर्षों का परिणाम था। हालांकि साम्राज्यवादी बड़ी शक्तियों के सीधे हस्तक्षेप के और देशी पूंजीपतियों के वर्ग स्वार्थों के चलते इसका एकीकरण जनवादी सिद्वान्तों के पूर्णतया विरुद्व हुआ था।

इन सभी राष्ट्रीयताओं के साझे राज्य के गठन के समय युगोस्लाविया के सभी इलाकों में मजदूर वर्ग और किसान समुदाय क्रांतिकारी उथल–फथल से गुजर रहे थे। यह उथल–फथल उस समय के अधिकांश यूरोपीय देशों की विशेषता थी। रूस की अक्टूबर क्रांति और अन्य अनेक देशों के क्रांतिकारी उभार ने शक्तिशाली प्रभाव डाल कर इस क्रांतिकारी उभार को तेज कर दिया था।

युगोस्लावियावी राज्य के जन्म से ही मेहनतकश अवाम ने स्वतःस्फूर्त तरीके से अपने बुनियादी हितों के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया था। हालांकि मजदूर आंदोलन के पास ऐसी कोई नेतृत्वकारी शक्ति नहीं थी जिसके पास स्पष्ट कार्यक्रम हो, सचेत क्रांतिकारी दिशा हो और ऐसा कोई संगठन हो जो ऐतिहासिक कार्यभारों को पूरा करने में सक्षम हो। ऐसी परिस्थितियों में, प्रतिक्रियावादी शासकों ने अपने वर्ग–चरित्र के मुताबिक युगोस्लावियाई राज्य को मजदूर व किसान आंदोलन से निबटने के लिए सिलसिलेवार व हिंसक रास्ते अपनाने में सफलता मिल गयी।

1919 में युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ। लेकिन दिसम्बर, **1920** में कम्युनिस्ट पार्टी और क्रांतिकारी मजदूर यूनियनों को प्रतिबंधित कर दिया गया। मजदूर आंदोलन को गैर–कानूनी घोषित कर दिया गया। **1920** में मजदूर आंदोलन पर किये गये हमले वस्तुतः तमाम किस्म के जनवादी प्रतिरोध को समाप्त करने तथा राजशाही की स्थापना की दिशा में पहले कदम थे। इसके बाद राष्ट्रीय असमानता और सर्बियाई प्रभुत्व की व्यवस्था व प्रतिक्रियावादी सामाजिक शक्तियों का शासन दृढ़ हो गया।

क्रांतिकारी उभार के डर ने तात्कालिक तौर पर विभिन्न राष्ट्रीयताओं के पूंजीपति वर्गों के बीच दुश्मनी को दबा दिया था और वे वृहद् सर्बियाई पूंजीपति वर्ग के पक्ष में हो गये थे क्योंकि वही ऐसा था जिसके पास राजनीतिक व सैनिक ताकत थी और जो विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों से आवश्यक समर्थन जुटा सकता था, यानी कि क्रांतिकारी आंदोलन का सफलतापूर्वक विरोध करने में वही सक्षम था।

युगोस्लावियाई राज्य के भीतर संगठित होने वाली विभिन्न राष्ट्रीयताओं का आर्थिक व सांस्कृतिक विकास अलग–अलग स्तर पर था। यह इस कारण कि देश के विभिन्न हिस्से अलग–अलग स्थितियों और प्रभावों में विकसित हुए थे। समग्रता में युगोस्लाविया आर्थिक तौर पर अविकसित क्षेत्रों से मिलकर बना था। प्रथम विश्व युद्व से हुए विनाश ने इसे और निम्नतर आर्थिक स्तर पर पहुंचा दिया था।

इस युगोस्लावियाई राज्य के अंतर्गत मजदूर वर्ग की परिस्थिति अत्यंत कठिन थी। यह इसलिए और भी थी क्योंकि विदेशी पूंजी और नये अविकसित पूंजीपति वर्ग इस पिछड़े देश से अधिकतम मुनाफा निचोड़ लेना चाहते थे।

गांवों में शोषण के गर्हित रूप चल रहे थे जो मेहनतकश किसान समुदाय के बड़े हिस्से में कंगालीकरण व सर्वहाराकरण को बढ़ा रहे थे। अधिकांश किसान छोटी जोत वाले थे। खेती पिछड़ी हुई थी। पूंजीपति वर्ग कृषि के विकास में कोई रुचि नहीं ले रहा था। इस तरह, किसानों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ा रहता था।

संचित व अतिरिक्त लाभ का एक अत्यल्प हिस्सा ही देश की उत्पादक शक्तियों के विकास में लगा हुआ था। उद्योगों में विदेशी पूंजी का प्रभुत्व था और वह अपने मुनाफे का बड़ा हिस्सा विभिन्न रूपों में देश से बाहर ले जा रही थी। इसी तरह, देशी पूंजीपति वर्ग भी अपने मुनाफे का बड़ा हिस्सा गैर–उत्पादक कार्यों में लगा रहा था तथा देश के बाहर निवेश कर रहा था।

युगोस्लाविया का पूंजीपति वर्ग इस देश को ऐसा नेतृत्व देने में अक्षम था जो इसका तेजी से आर्थिक विकास कर सके तथा यहां के लोगों की आर्थिक बेहतरी व उनकी प्रगति के द्वार खोल सके।

युगोस्लाविया आर्थिक तौर पर अधिकाधिक निर्भरशील देश होता गया जिसकी अर्थव्यवस्था अर्द्ध–उपनिवेशों जैसी थी। विदेशी पूंजी की लूट और देशी पूंजीपतियों द्वारा विदेशों में निवेश ने इसे उस दिशा में और धकेल दिया था। ये भौतिक आधार और अंतर्विरोध थे, जिन पर देश के भीतर राजनीतिक सम्बन्ध विकसित हुए थे।

वृहद्तर सर्बियाई प्रभुत्व और केन्द्रीयता ने फराने युगोस्लाविया के अस्तित्व के समूचे दौर में युगोस्लाविया की राष्ट्रीयताओं के बीच खाई चौड़ी करने का काम लगातार किया था। अकेले मजदूर आंदोलन ने ही एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण सफलतायें अर्जित की थीं। अपने संघर्षों के माध्यम से मजदूर वर्ग ने सभी राष्ट्रीयताओं में जनवादी शक्तियों को एकजुट किया था। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा कोई भी अखिल युगोस्लावियाई पार्टी नहीं थी। कथित 'युगोस्लाव राष्ट्रीय एकता' के आधार पर नये राजनीतिक संगठन बनाने के तमाम प्रयास असफल हो गये थे। दूसरी तरफ, फासीवादी किस्म के पूंजीवादी–अलगाववादी संगठन खड़े किये गये थे, जिनका जन–समुदाय के बीच कोई खास प्रभाव नहीं था।

विभिन्न राष्ट्रीयताओं के पूंजीपति वर्ग अपने प्रभुत्व के लिए संघर्ष में विदेशों से समर्थन मांगते थे। भीतरी झगड़े, सभी सम्भव तरीके से विदेशी हस्तक्षेप के लिए दरवाजा खुला छोड़ देते थे। यह हस्तक्षेप आर्थिक घुसपैठ से लेकर शासक राजनीतिक हल्कों को घूस देने, खुला राजनीतिक दबाव डालने तथा खुली धमकियां देने तक था।

मजदूर आंदोलन और शासक वर्ग के बीच शत्रुता बढ़ती जा रही थी। बेरोजगारी, ग्रामीण इलाकों में किसानों का कंगालीकरण, निर्मम शोषण, फलिस आतंक, विभिन्न क्षेत्रों में अकाल, अनेकानेक अन्य अनसुलझे सामाजिक प्रश्न, राष्ट्रीयता के सवाल को हल करने में पूंजीपति वर्ग का दिवालियापन – इन सभी ने मजदूर आंदोलन की गतिविधियों के लिए काफी जगह निर्मित कर दी थी। इससे भी बढ़कर इन्होंने शहरों व देहातों की मेहनतकश आबादी के संघर्ष को क्रांतिकारी धार देने में मदद की थी।

युगोस्लावियाई पूंजीपति वर्ग और अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवादी शक्तियों के सरगनाओं के घनिष्ठ सम्बन्ध युगोस्लाविया की विदेश नीति को भी तय कर रहे थे। प्रथम विश्व युद्व के बाद वर्साई संधि से उपजे युगोस्लावियाई राज्य की विदेश नीति सोवियत विरोधी अंतर्राष्ट्रीय योजनाओं व साजिशों के तथा जन समुदाय के क्रांतिकारी उभार के डर के तहत बनी थी।

पूंजीवादी युगोस्लाविया स्थायी तौर पर आर्थिक व राजनीतिक संकट में था। मेहनतकश अवाम जनवाद की मांग करते थे, वे ऐसी सरकार चाहते थे जो सत्ता में उनके प्रभाव को प्रतिबिम्बित करे, राष्ट्रीयताएं अपनी समस्या का समाधान बराबरी के आधार पर तथा एक संघीय राज्य के बतौर चाहती थीं। लेकिन प्रतिक्रियावादी सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था अधिकाधिक इनके विरुद्व बढ़ती गयी और इसलिए क्रांतिकारी जनवादी समाधान अधिकाधिक आवश्यक होता गया।

वृहद्तर सर्बियाई पूंजीपति वर्ग ने, क्रोएशियाई व स्लोवेनियाई पूंजीपति वर्ग के हिस्सों से गठजोड़ करके मजदूर वर्ग और मेहनतकश अवाम के बढ़ रहे दबाव का जवाब **6** जनवरी, **1929** को खुली तानाशाही कायम करके दिया। लेकिन यह तानाशाही हुकूमत भी व्यवस्था को स्थिरता नहीं प्रदान कर सकती थी।

तीस का दशक, लोगों के अपनी राजनीतिक, आर्थिक, राष्ट्रीयता और अन्य समस्याओं के समाधान के लिए बढ़ते जा रहे संघर्षों का दशक था। जैसे–जैसे संघर्ष गति पकड़ता जा रहा था, वैसे–वैसे कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। जन–समुदाय के दबाव के चलते फासीवादी आंदोलनों द्वारा युगोस्लाविया में फासीवाद थोपने के प्रयास असफल हो गये।

लेकिन जैसे–जैसे राजनीतिक संकट गहराता जा रहा था, वैसे–वैसे पूंजीपति वर्ग का फासीवाद समर्थक हिस्सा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए रोम–बर्लिन धुरी की तरफ देश को ले जाने के लिए प्रयास तेज करता जा रहा था। बढ़ते आंतरिक अंतर्विरोधों के चलते वृहद्तर सर्बियाई पूंजीपति वर्ग क्रोएशियाई पूंजीपति वर्ग के साथ ''समझौता'' करना चाहता था जिससे कि मजदूर वर्ग के संघर्षों को कुचला जा सके और मजदूर आंदोलन को किसान समुदाय से अलग किया जा सके। इस ''समझौते'' ने न तो राष्ट्रीयताओं के अलग–अलग पूंजीपति वर्ग के बीच शत्रुता को खतम किया और न राष्ट्रीयताओं के सवाल को हल किया और न ही असंतुष्ट व्यापक जन समुदाय के दबाव को कम किया।

जैसे कि पहले कहा जा चुका है कि युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म **1919** में हुआ था। यह मजदूर आंदोलन से जुड़ी हुई थी। यह युगोस्लाविया की अलग–अलग राष्ट्रीयताओं की सामाजिक जनवादी पार्टियों के सुधारवादी व अवसरवादी हिस्सों के विरुद्व संघर्ष करके और उन्हें मजदूर आंदोलन से अलग–थलग करके गठित हुई थी। पार्टी को शुरू से ही गैर कानूनी घोषित कर दिया गया था। इसके कार्यकर्ताओं को जेलों में ठूंस कर, अन्य किस्म की यातनायें देकर उनकी कानूनी और गुप्त हत्यायें करके युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी को कमजोर करने की कोशिशें की गयीं। लेकिन यह तमाम कमजोरियों एवं विपरीत स्थितियों के बावजूद मजदूर आंदोलन से जुड़ी थी। **6** जनवरी, **1929** को घोषित तानाशाही ने इसको काफी हद तक कमजोर कर दिया था। लेकिन इसने जल्द ही अपने को नयी परिस्थितियों के मुताबिक ढाल लिया था। इस तरह, कम्युनिस्ट पार्टी देश के भीतर एक शक्तिशाली राजनीतिक ताकत के बतौर उभर चुकी थी। इसके संगठनों की गैर–कानूनी स्थिति और आतंक के राज्य के बावजूद इसने अपनी राजनीतिक गतिविधियों के जरिये गैर कानूनियत की सीमाओं को तोड़ने में कुछ सफलताएं अर्जित की।

युगोस्लाविया के शासक वर्ग का एक हिस्सा हिटलर के साथ शामिल होने के विरुद्व था। उसने सेना के नेतृत्व के साथ मिलकर सत्ता पर कब्जा कर लिया। यह पश्चिमी साम्राज्यवादी समर्थक शासक वर्ग था। इसके बाद हिटलर ने युगोस्लाविया पर हमला बोल दिया। इससे फराना युगोस्लावियाई राज्य खतम हो गया। जर्मन, इटली, हंगरी और बुल्गारिया के फासीवादी हमलावरों ने युगोस्लाविया नाम के देश को दुनिया के नक्शे से ही हटा दिया। फराने युगोस्लाविया का अंत हो गया था और व्यापक जन समुदाय का इसके प्रति मोहभंग हो गया था। अप्रैल, **1941** में हिटलर के हमले के समय शासक वर्ग का एक बड़ा हिस्सा फासीवाद का समर्थक बन गया था। युगोस्लावियाई पूंजीपति वर्ग का दूसरा हिस्सा हिटलर विरोधी गठबंधन के पश्चिमी साम्राज्यवादियों की मदद से सत्ता में आना चाहता था। उसने युगोस्लाविया की निर्वासित सरकार का गठन लंदन में कर रखा था। इसने युगोस्लाविया की पहले की विघटित सेना के अफसरों की कमान में गठित सैनिक टुकड़ियों (चेतनिक ग्रुपों) को समर्थन दे रखा था। ये चेतनिक गुट देश के भीतर गृहयुद्व भड़काने और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में पूफट डालने का प्रयास कर रहे थे। बाद में ये समूह खुलेआम फासीवाद की दलाल सरकारों की मदद में आ गये और फासीवादी हमलावरों के साथ हो गये।

पूंजीवादी युगोस्लाविया के खतम हो जाने के बाद युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी ने सभी राष्ट्रीयताओं की जनता का और देशभक्त शक्तियों का आह्वान किया कि वे आक्रमणकारियों और उनके देशी सहयोगियों के विरुद्व संघर्ष में एक साझे मोर्चे में शामिल हों। वे देश की मुक्ति के लिए विदेशी ताकतों का निष्क्रियतापूर्वक इंतजार न करें। कम्युनिस्ट पार्टी ने गुप्त सैनिक कमेटियों का एक व्यापक ताना–बाना खड़ा किया। उन्होंने फरानी व पराजित युगोस्लावियाई सेना द्वारा छोड़े गये हथियारों और साज सामान को इकट्ठा किया तथा मई, **1941** तक आते– आते उन्होंने छापामार गतिविधियां शुरू कर दी थीं।

इसी दौरान कम्युनिस्ट पार्टी ने व्यापक देश व्यापी राजनीतिक संगठन, एक राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा, बनाने की राजनीतिक तैयारी शुरू कर दी थी जो हथियारबंद बगावत के समय नेतृत्व दे सके। सोवियत संघ पर हिटलर के हमले ने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी जिसने आम हथियारबंद उभार को सम्भव ही नहीं अवश्यम्भावी बना दिया था। इसलिए जून, **1941** में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की अगुवाई करने वाली कम्युनिस्ट पार्टी ने युगोस्लाविया की सभी राष्ट्रीयताओं की जनता को, तमाम देश भक्त ताकतों को, और विशेष तौर पर मजदूर वर्ग और मेहनतकश अवाम को हिटलर के इस नये आक्रमण के विरुद्व सशस्त्र संघर्ष तेज करने का आह्वान किया और **4** जुलाई को इसने आम सशस्त्र उभार के लिए आह्वान किया। इस आह्वान के बाद समूचे युगोस्लाविया में छापामार युद्व पैफल गया।

1941 के अंत तक छापामार टुकड़ियां राष्ट्रीय मुक्ति सेना की ब्रिगेड तक बन चुकी थी और जो बाद में राष्ट्रीय मुक्ति सेना की डिवीजन और कोर में विकसित हुई। उभार के दौरान और आक्रमणकारियों तथा देशी गद्दारों के विरुद्व मिली विजयों के दौरान जनता की सरकार की व्यवस्था–राष्ट्रीय मुक्ति कमेटियों का गठन किया गया।

1943 में ऐसा दिन भी आया जब इटली के समर्पण करने के बाद युगोस्लाविया के बड़े भाग पर राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का कब्जा हो गया। अब वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दावा कर सकता था कि वह फासीवादी हमलावरों के विरुद्व राष्ट्रीय प्रतिरोध की एक मात्र शक्ति था। **29** नवम्बर, **1943** को युगोस्लाविया की राष्ट्रीय मुक्ति के लिए फासिस्ट विरोधी परिषद का गठन किया गया। यही नये युगोस्लाविया के जन्म का आगाज़ था।

जैसे कि पहले कहा जा चुका है कि पश्चिमी साम्राज्यवादियों की समर्थक एक निर्वासित सरकार थी जिसे शाही युगोस्लाविया की निर्वासित सरकार कहा जाता था। पश्चिमी साम्राज्यवादी ताकतें राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर यह दबाव डाल रही थीं कि दोनों सरकारें मिलकर एक साझी सरकार का गठन करें। **16** जून, **1944** को युगोस्लाविया की मुक्ति के लिए राष्ट्रीय कमेटी **(NKOJ)** के अध्यक्ष जोसेफ ब्रॉज टीटो और निर्वासित शाही सरकार के प्रधानमंत्री आई. सुबासिक के बीच पहला समझौता यह हुआ कि कब्जाकारी फासीवादी शक्तियों तथा उनके सहयोगियों से युगोस्लाविया को मुक्त कराने के संघर्ष में दोनों आपस में सहयोग करेंगे। इस समझौते में यह कहा गया था कि निर्वासित सरकार प्रगतिशील और जनवादी तत्वों से मिलकर बननी चाहिए तथा जनता के मुक्ति आंदोलन के विरुद्व किसी भी तरह की सैनिक कार्यवाही में इसे शिरकत नहीं करनी चाहिए। इस समझौते ने सुबासिक सरकार पर यह कार्यभार सौंपा कि वह युगोस्लाविया की राष्ट्रीय मुक्ति सेना के लिए सहायता संगठित करे तथा निर्वासित सरकार देश के भीतर बनी युगोस्लाविया की मुक्ति कमेटी **(NKOJ)** को पूरी मान्यता दे। सुबासिक सरकार राष्ट्रीय मुक्ति सेना के साथ युगोस्लावियाई जनता की तमाम सैनिक शक्तियों को एकजुट करे तथा कब्जाकारी शक्तियों के साथ सहयोग करने वालों की गद्दार के बतौर निंदा करे। सुबासिक सरकार, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की आवश्यकताओं के अनुसार विदेशों में युगोस्लाविया का प्रतिनिधित्व करे। खुद युगोस्लाविया में इसने स्वीकार किया कि युगोस्लाविया की राष्ट्रीय मुक्ति के लिए फासिस्ट विरोधी परिषद **(AVNOJ)**, जिसका कार्यकारी निकाय युगोस्लाविया की मुक्ति के लिए राष्ट्रीय कमेटी **(NKOJ)** है, के अस्थाई प्रशासन के अंतर्गत जनवादी संघीय व्यवस्था की स्थापना से जनवादी उपलब्धियां मिली हैं। बदले में, युगोस्लाविया की मुक्ति के लिए राष्ट्रीय कमेटी ने यह स्वीकार किया कि वह फिलहाल राजा व राजशाही के सवाल को नहीं उठायेगी। देश की मुक्ति के बाद जनता पर यह छोड़ दिया जायेगा कि युगोस्लाविया के भविष्य की सरकार का स्वरूप क्या हो।

दूसरा समझौता नवम्बर, **1944** में हुआ। इसके तहत दोनों सरकारों के स्थान पर एक मिलीजुली सरकार बनाने पर सहमति बनी। इसने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के दौरान कायम जनवादी संघीय ढांचे को बरकरार रखा और यह तय किया कि समूचे देश की मुक्ति के तीन महीने के बाद चुनी जाने वाली संविधान सभा पर सरकार के स्वरूप के बारे में अंतिम फैसला होगा। जब तक संविधान सभा इसके बारे में फैसला नहीं करती तब तक युगोस्लाविया के भीतर राजा के आने पर रोक लगा दी गयी।

इस समझौते को तत्काल लागू नहीं किया जा सका क्योंकि राजा पीटर **II** अमरीकी साम्राज्यवादियों के समर्थन से इसमें रुकावट पैदा कर रहा था। सोवियत संघ ने नये युगोस्लाविया का दृढ़ता से समर्थन किया और समझौते को लागू करने की मांग की। **1945** में याल्टा सम्मेलन ने भी यह संस्तुति की कि समझौते को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाय। इस तरह राजा ने अपने कार्य को त्याग दिया और टीटो की अगुवाई में संयुक्त सरकार का गठन किया गया। इसे हिटलर–विरोधी गठबंधन के सभी देशों ने मान्यता दे दी। नवम्बर में संविधान सभा के चुनाव हुए और इसी महीने राजशाही को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया गया। संविधान सभा ने युगोस्लाविया के संघीय जन गणतंत्र की घोषणा करने वाला प्रस्ताव पारित किया।

चूंकि मजदूर वर्ग और मेहनतकश जन–समुदाय के सामाजिक और भौतिक हित जन सरकार की नीतियों में प्रभुत्वकारी स्थिति में थे, इसलिए नये राज्य का संगठन राष्ट्रीय मुक्ति युद्व और समाजवादी क्रांति दोनों को लागू करने में क्रमशः शक्तिशाली औजार बन सकता था।

II समाजवाद की दिशा में कुछ कदम के बाद पूंजीवाद की ओर

द्वितीय विश्व युद्व के बाद एक समाजवादी खेमा अस्तित्व में आ गया था। पूर्वी यूरोप के देशों में लाल परचम फहरा रहा था। एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों में तेजी आ गयी थी। साम्राज्यवाद का उपनिवेशवाद वाला दौर समाप्ति की ओर था। साम्राज्यवाद पीछे हटने के लिए मजबूर हो गया था। ऐसे ही समय में युगोस्लाविया में भी समाजवाद की ओर कुछ कदम उठाये गये। उद्योग और आवागमन के सभी बुनियादी उत्पादन साधनों का राष्ट्रीयकरण किया गया। बैंकों और वाणिज्य का राष्ट्रीयकरण किया गया तथा एक हद तक क्रांतिकारी भूमि सुधार लागू किया गया। समाजवादी नियोजन को लागू किया गया। लेकिन जल्द ही, क्रांतिकारी भूमि सुधार से युगोस्लावियाई राज्य पीछे हटने लगा। युगोस्लाविया में राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति राष्ट्रवाद के परचम तले हुई थी। देशभक्ति के नारे से व्यापक आबादी की गोलबंद करने में व्यापक सहूलियत मिली थी। लेकिन यही राष्ट्रवाद अब युगोस्लाविया को समाजवाद से पीछे हटने की ओर ले जा रहा था। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को अब यह लगने लगा कि उसके राष्ट्रीय हित मांग करते हैं कि अल्बानिया को युगोस्लाविया का एक गणराज्य बना लिया जाय। इसी तरह, उसने ग्रीस में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चल रहे संघर्षों को समर्थन देना बंद कर दिया और बाद में ग्रीस और तुर्की के साथ संधि कर ली।

पूर्वी यूरोप की शासक कम्युनिस्ट पार्टियों और फ्रांस व इटली की कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने **1947** में कम्युनिस्ट सूचना ब्यूरो **(Cominfom)** की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य यूरोप में अमरीकी साम्राज्यवादियों की साजिशों के विरुद्व एक साझा मंच बनाने के साथ ही समाजवादी निर्माण में एक–दूसरे की मदद करना तथा सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के कर्तव्यों के तहत दुनिया

के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की मदद करना था। कोमिन्फार्म के तहत आने वाले देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों की बिरादराना आलोचना की जाती थी।

इसी समय अमरीकी साम्राज्यवादी ट्रूमैन सिद्वान्त लेकर आये (मार्च, 1947)। इसकी व्यवस्था जॉर्ज मार्शल ने 1948 में इस तरह की 'बाल्कन उपग्रहों– युगोस्लाविया, अल्बानिया, बुल्गारिया, रूमानिया और हंगरी–के प्रति संयुक्त राज्य के अंतिम लक्ष्य को इस तरह के सार–संक्षेप में पेश किया जा सकता है कि वह इन राज्यों की जनता को प्रभावकारी तरीके से मानव अधिकारों और गैर–भेदभाव भरे व्यवहार पाने की स्थितियों के अंतर्गत राष्ट्रों के परिवार में स्वतंत्र सदस्य के बतौर जनतंत्र की स्थापना करना चाहता है।' अमरीकी साम्राज्यवादी पश्चिमी यूरोप में फौजी गठबंधन नाटो बनाने जा रहे थे। वे पूर्वी यूरोप के देशों में, विशेष तौर से युगोस्लाविया में अपनी कोशिशें जारी रखे हुए थे। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के दौरान युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को अमरीकी व ब्रिटिश साम्राज्यवादियों से मदद मिल चुकी थी। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मौजूद राष्ट्रवादी तत्वों को सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद की भावना खटक रही थी। वे अमरीकी साम्राज्यवादियों और दुनिया के अन्य पूंजीवादी देशों के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों के आधार पर युगोस्लाविया को एक शक्तिशाली ताकत के बतौर खड़ा करने में मददगार समझने लगे।

जून, 1948 में कोमिन्फार्म ने युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के अन्दर राष्ट्रवादी भटकाव चिर्ति किया। कोमिन्फार्म की बैठक में युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी को बुलाया गया। उसने बैठक में आने से इंकार कर दिया। जून 1948 में कोमिन्फार्म की बैठक में मौजूद पार्टियों ने सर्व सम्मति से युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की निंदा की और घोषित किया कि युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने बैठक में आने से इंकार करके अपने को बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के परिवार से बाहर, संयुक्त कम्युनिस्ट मोर्चे से बाहर और परिणाम स्वरूप सूचना ब्यूरो की कतारों से बाहर कर दिया है। इसके पहले सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की घरेलू और विदेश नीति के बड़े सवालों पर गैर–मार्क्सवादी कार्यदिशा अपनाने, सोवियत संघ और इसकी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति गैर–दोस्ताना दृष्टिकोण अपनाने, युगोस्लाविया के किसानों को एक वर्ग के बतौर देखने, धनी किसानों को अलग से न देखने तथा भूमि का सामूहिकीकरण न करने तथा युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी को जन मोर्चे के अधीन रखने एवं कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियों को गुप्त रखने जैसे कि वह शासक पार्टी न होकर अभी भी भूमिगत पार्टी हो, आदि सवालों पर आलोचना कर चुकी थी। इन सभी बड़े प्रश्नों पर कोमिन्फार्म ने युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी पर मार्क्सवाद–लेनिनवाद से भटकने का आरोप लगाया। इसके बाद युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने उन सदस्यों और एवं नेताओं के विरुद्व बड़े पैमाने पर गिरफ्रतारी करने तथा पार्टी से निष्कासित करने का अभियान चला दिया जिन्हें वह कोमिन्फार्म समर्थक समझती थी। हेबरांग व जुजोविक जैसे सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवादी नेताओं को गिरफ्रतार कर लिया गया।

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी कोमिन्फार्म से निष्कासित किये जाने के बाद, युगोस्लाविया के समाज को बड़े पैमाने पर पूंजीवादी रास्ते पर ले जाने की ओर क्रमशः बढ़ती गयी। एक तरफ, इसने मार्क्सवाद–लेनिनवाद का चोगा पहन रखा था और वह समाजवादी समाज के निर्माण की माला जप रही थी। दूसरी तरफ, वह घरेलू व विदेश नीतियों में परिवर्तन करती जा रही थी जो युगोस्लाविया को एक पूंजीवादी समाज में तब्दील करने की ओर लेते जा रहे थे। इसने अमरीकी साम्राज्यवादियों से सांठगांठ करना शुरू कर दिया। अमरीकी साम्राज्यवादियों से युगोस्लाविया को पहला कर्ज सितम्बर, 1949 में मिल चुका था। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने युगोस्लाविया को सैनिक सहायता देना शुरू कर दिया और युगोस्लाविया ने अमरीकी शर्तों को मानते हुए बेलग्रेड में अमरीकी सैनिक सहायता सलाहकार ग्रुप (MAAG) को स्थापित कर दिया। इस समय तक अमरीकी विदेश मंत्री जॉन फास्टर डलेस यह सोचने लगा था कि युगोस्लाविया को नाटो के साथ कम से कम इतना तो हो ही कि सम्बद्व कर दिया जाय। इसी दौरान युगोस्लाविया ने ग्रीस और तुर्की के साथ मिलकर दोस्ती और सहकार की संधि की। इस संधि में तीनों देशों की सेनाओं के बीच अनौपचारिक सलाह–मसविरा करने का जिक्र भी शामिल था। अमरीकी साम्राज्यवादी इसे सम्पूर्ण सैन्य गठबन्धन में बदलने का दबाव डाल रहे थे। 9 अगस्त, 1945 को इन तीनों देशों ने एक दूसरा और ज्यादा मजबूत बाल्कन समझौता (पैक्ट) किया। इसमें परिभाषित किया गया कि किसी एक के विरुद्व अतिक्रमण इन सभी के विरुद्व अतिक्रमण माना जायेगा। सहयोग के लिए एक स्थायी सचिवालय कायम किया गया और सैनिक स्टाफ बहसों को जारी रखने तथा तीनों विदेश मंत्रियों की नियमित बैठकों की बात की गयी। अमरीकी व ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की मध्यस्थता से ट्रीस्टे के स्वतंत्र क्षेत्र को दो हिस्सों में बांट कर एक हिस्से को इटली को दे दिया गया। इस तरह युगोस्लाविया के तीसरे नाटो पड़ोसी के साथ सम्बन्ध अच्छे हो गये। अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा चीन व सोवियत संघ की समाजवादी देशों को घेरने की नाटो–सेण्टो–सीटो की गठबंधनों की श्रृंखला की वृहद् योजना में युगोस्लाविया का शासक वर्ग साझीदार बन गया। 1951 से युगोस्लाविया की आर्थिक मदद के जरिये ब्रिटेन और फ्रांस भी अमरीकी साम्राज्यवादियों के साझीदार बन गये।

एक ओर युगोस्लाविया का नेतृत्व अमरीकी साम्राज्यवादियों के साथ सांठ–गांठ कर रहा था वहीं दूसरी ओर वह सोवियत संघ की समाजवादी व्यवस्था पर कीचड़ उछाल रहा था। कारदेल्ज ने सोवियत संघ पर एकाश्म निरंकुशता कायम करने का आरोप लगाया उसके अनुसार यह, केन्द्रीयकृत नौकरशाही जिसके पास राजनीतिक व आर्थिक शक्ति का एकाधिकार है, पश्चिम के किसी भी पूंजीवादी– जनवादी देश की 'वर्ग' सरकार की तुलना में अवश्यमभावी तौर पर ज्यादा मनमानेपन वाली गैर–जिम्मेदार शक्ति के साथ एक नौकरशाही 'जाति' को पालती–पोसती है। उसने समाजवादी राज्य और पूंजीवादी राज्य के बुनियादी वर्ग चरित्र के विभेद को खत्म कर दिया और सोवियत संघ के सर्वहारा अधिनायकत्व को नकली करार दिया। उसने 1936 के सोवियत संविधान को औपचारिक तौर पर पश्चिमी किस्म की ऐसी संसदीय व्यवस्था कहा जिसमें पश्चिमी बहु–पार्टी प्रणाली नहीं है। उसके अनुसार, ''इस प्रकार सोवियत व्यवस्था शब्द के नकारात्मक अर्थ में 'एक पार्टी व्यवस्था' हो गयी।'' उसने कहा कि जब तक मेहनतकश समुदाय के पास स्वतंत्र निकाय रहते हैं जिसके जरिये वे उच्चतर स्तर के राज्य के निकायों तक अपनी इच्छा व्यक्त कर सकते हैं और उनको प्रभावित कर सकते हैं, तब तक :

> '' ऐसी व्यवस्था उनको किसी भी बहु–पार्टी व्यवस्था से ज्यादा जनवाद की गारण्टी करेगी। लेकिन जब एक बार ऐसी व्यवस्था समाप्त कर दी जाती है ... और बिना इसकी बहु–पार्टी व्यवस्था के एक केन्द्रीयकृत पूंजीवादी राज्य व्यवस्था लागू की जाती है तो जनतंत्र की कोई भी बात बिल्कुल मजाक बन जाती है। तथाकथित सोवियत संघ में आज मामला यही है।''**(Kardelj,1952, Printed as a pamphlet, quoted in The Yugoslav Experiment 1948-74, Page-67-68, by Dennison Rusinow, C.Hurst and Company, London, 1977)**

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व समाजवाद पर प्रहार और अमरीकी साम्राज्यवादियों से सांठ–गांठ अनायास ही नहीं कर रहा था। उसका साफ उद्देश्य था। यह उद्देश्य युगोस्लाविया में पूंजीवाद की ओर लौटना था। उसने ''मजदूरों की परिषद'' और स्व–प्रबन्धन की नीति को लागू किया। इसे उसने सही समाजवाद कहा। टीटो ने ''राज्य आर्थिक उद्यमों के प्रबन्धन और श्रम के सामूहिकों के उच्चतर आर्थिक संघों के बारे में बुनियादी कानून'' को परित कराने में खुद पहल ली। इस कानून को पारित करते समय टीटो ने इसे ''समाजवाद का हमारा रास्ता'' कहा। इस कानून के पारित होने के बाद कहा गया कि अब मजदूर अपने उद्यमों के ट्रस्टी हो गये हैं। मजदूरों की परिषद को कहने के लिए बहुत सारे अधिकार दिये गये। लेकिन वास्तविकता में ये महज औपचारिक बने रहे। प्रभावी नियंत्रण

हमेशा निदेशकों का बना रहा। सत्ता के विकेन्द्रीकरण के नाम पर स्थानीय पार्टी नेताओं व नौकरशाहों का मुनाफा बढ़ाने तथा भ्रष्टाचार करने का रास्ता प्रशस्त हुआ। अब उद्यमों के निदेशकों को अपने आगतों को खरीदने तथा उत्पादों को बाजार में बेचने की छूट मिल गयी। उनको खरीदने, उत्पादन करने और बेचने की छूट मिलने से मुनाफा बढ़ाने का रास्ता खुल गया। राज्य का दखल सिर्पफ अपने कर बढ़ाने तथा उसे निवेश करने तक सीमित रह गया। राज्य नियोजन को समाप्त कर दिया गया।

1952 में युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का नाम बदलकर युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग कर दिया गया। इसी समय सम्पन्न छठी पार्टी कांग्रेस में कम्युनिस्ट लीग की भूमिका को 'जन समुदाय को शिक्षित करने में राजनीतिक और विचारधारात्मक कार्यों' तक सीमित कर दिया गया। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग को मजदूर वर्ग का हिरावल दस्ता के बजाय मजदूर वर्ग का 'सचेत व सर्वाधिक प्रगतिशील संगठित हिस्सा' कहा गया तथा कारदेल्ज ने पार्टी के नेतृत्वकारी भूमिका के बजाय इसकी 'सचेत भूमिका' की चर्चा की। एक तरफ युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की समाज में नेतृत्वकारी भूमिका को समाप्त करने का प्रावधान किया जा रहा था तो दूसरी तरफ, सोवियत संघ पर प्रहार तेज किये जा रहे थे। टीटो ने छठी पार्टी कांग्रेस के अपने संबोधन में सोवियत संघ की अंतर्राष्ट्रीय व घरेलू नीतियों पर तीखे प्रहार किये और इसकी जड़ें सोवियत के 'राज्य पूंजीवाद' की प्रकृति में तथा मार्क्सवाद– लेनिनवाद के अन्य संशोधनों में बताया।

1953 में जन मोर्चे का नाम बदलकर युगोस्लाविया के 'मेहनतकश अवाम का समाजवादी संश्रय (**SAWPY**)' कर दिया गया। कारदेल्ज ने अपने भाषण में इस संगठन के व्यापक तौर पर बड़े राजनीतिक महत्व के बारे में कहा कि 'संश्रय को सभी राज्य और सामाजिक स्व–शासित निकायों की राजनीतिक नींव होना चाहिए। व्यापक बहसों और आलोचना से ये निकाय जन समुदाय की निगरानी के अंतर्गत रहेंगे।' उसके अनुसार इसके लिए :

> ''यह आवश्यक होगा कि ... उस व्यवहार को समाप्त किया जाय जिसमें पार्टी संगठन अपनी मीटिंगों में तमाम राजनीतिक व अन्य सवालों पर पैफसला लेते थे और फिर इन फैसलों की स्वीकृति के लिए जन मोर्चे के संगठनों के पास भेज देते थे। कम्युनिस्टों की लीग के कार्यभार मुख्यतया विचारधारात्मक सवालों पर ... और ऐसे ही मसलों पर मोड़ देना चाहिए, जबकि ठोस राजनीतिक और अन्य सामाजिक सवालों को समाजवादी संश्रय के संगठनों को सीधे तय करना चाहिए।'' **[kardelj,'The Role and Tasks of the Socialist Alliance of the Working people of Yugoslavia ¼Report submitted to the 4th Congress of the people's Front), Quoted from ibd, Page-78]**

यहां तक आते–आते युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग में संशोधनवाद काफी आगे बढ़ चुका था। सोवियत संघ में स्तालिन की मृत्यु के पश्चात खुश्चोव सत्ता में आ गया था। खुश्चोव के नेतृत्व में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग के नेतृत्व के साथ सम्बन्ध सुधारने की कोशिश की। खुश्चोव ने दुनिया की कम्युनिस्ट पार्टियों को यह बताया कि **1948** में युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी को कोमिन्फार्म से निकालने के फैसले में गलती हुई थी तथा **1949** में कोमिन्फार्म ने गलत पैफसला लिया था। इसलिए यह जरूरी है कि इन फैसलों को बदल दिया जाय। **1954** में ही चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने इनके बदलने पर सहमति देते हुए भी यह आगाह किया था कि युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग का नेतृत्व संशोधनवादी दिशा में इतना आगे बढ़ चुका है कि उसके अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में वापस लौटने की संभावना बहुत कम है। फिर भी, युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग के नेताओं द्वारा यदि गलती मान ली जाती है और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में शामिल करके उन्हें संशोधनवाद के रास्ते को छोड़ने के लिए तैयार कर लिया जाता है तो इस प्रयास में कोई नुकसान नहीं है। यदि वे संशोधनवाद के रास्ते पर आगे बढ़ते जाते हैं तो इससे युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग के नेतृत्व के संशोधनवादी चरित्र का पर्दाफाश करने में मदद मिलेगी। यह हो सकता है कि खुश्चोव युगोस्लाविया के संशोधनवादी नेतृत्व के अवसरवादी सांठगांठ की कोशिश में यह प्रयास कर रहा था क्योंकि **1956** की सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में खुश्चोव ने भी उसी तरह से स्तालिन के नेतृत्व के बारे में कीचड़ उछाला जैसा कि पहले युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व उछाल चुका था। लेकिन खुश्चोव के नेतृत्व में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की तथा अन्य बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों की सम्बन्ध सुधारने की तमाम कोशिशों के बावजूद युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग का नेतृत्व संशोधनवाद के रास्ते पर आगे बढ़ता गया तथा युगोस्लाविया के समाज को पूंजीवादी रास्ते पर बढ़ाता गया।

III संशोधनवादी कार्यक्रम

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस के पहले छठी कांग्रेस के कुछ फैसलों को बदलने की प्रक्रिया शुरू हो गयी थी। मिलोवान जिलास ने छठी कांग्रेस में पार्टी की भूमिका को राज्य से अलग करने की हिमायत की थी तथा उसे महज विचारधारात्मक व राजनीतिक शिक्षा तक सीमित रखने की बात उस पार्टी कांग्रेस में पारित हुई थी। लेकिन जिलास अपनी बातों को तार्किक परिणति तक ले गया। उसने पार्टी को समाप्त करने की बात कह डाली। इस पर टीटो ने उसे पार्टी से निष्कासित करके जेल में डाल दिया। इसके बाद युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस **1958** में हुई। इसके पहले **1956** में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की **20**वीं कांग्रेस हो चुकी थी। जिसमें उसने सिलसिलेवार तरीके से अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए संशोधनवादी दिशा पेश की थी। **1957** में खुश्चोव शासक कम्युनिस्ट पार्टियों के सम्मेलन में अपनी संशोधनवादी कार्यदिशा प्रस्तावित कर दी थी, जिसका चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टियों ने विरोध किया था। अंततः **1957** का मास्को घोषणा पत्र संशोधित रूप में एक समझौते के दस्तावेज के रूप में पारित हुआ।

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग का नेतृत्व अपनी संशोधनवादी कार्यदिशा पर लगातार आगे बढ़ता रहा। युगोस्लाविया के नेतृत्व ने **1956** में हंगरी के प्रतिक्रियावादी विद्रोह का समर्थन किया। टीटो ने इसे ''स्तालिनवाद'' के विरुद्व प्रगतिशील शक्तियों का संघर्ष कहा। टीटो ने पूला में भाषण देते हुए यह कहा कि युगोस्लाविया का समाजवाद का रास्ता ज्यादा सही और एकमात्र सम्भव रास्ता है।

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस के कार्यक्रम में घरेलू व विदेश नीतियों के बारे में निम्नलिखित मार्क्सवाद–लेनिनवाद विरोधी दृष्टिकोण व्यक्त किये गये।

इसने कहा :

> '' दुश्मनीपूर्ण सैनिक–राजनीतिक गुटों **(Block's)** में दुनिया का विभाजन दुनिया के आर्थिक विभाजन की ओर भी ले जाता है ... और इस प्रकार दुनिया के एकीकरण की प्रक्रिया को रोकता है और मानवता की सामाजिक प्रगति को बाधित करता है।'' **(Yugoslavia's Way: The Programme of the League of Communist of Yugoslavia' Page-70, All Nation's Press, New York, 1958,**अनुवाद हमारा)

यह विश्लेषण पूर्णतया दो बुनियादी तौर पर भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं –समाजवाद और पूंजीवाद–के बीच के अंतर को पूर्णतया घालमेल के साथ पेश करता है और इन दो बुनियादी तौर पर अलग–अलग विश्व आर्थिक–राजनीतिक व्यवस्थाओं को, समाजवादी खेमे और साम्राज्यवादी खेमे को दुश्मनीपूर्ण सैनिक– राजनीतिक गुटों के बतौर चित्रित करता है। टीटो गुट की धारणा के अनुसार, विश्व या विश्व की

अर्थव्यवस्था पहले पूंजीवाद–साम्राज्यवाद के अंतर्गत एकताबद्व थी। इसका यह अर्थ हुआ कि पूंजीवादी देश कभी भी विश्व प्रभुत्व के लिए टकराने वाले गुटों में बंटे हुए नहीं थे।

यह टकराहट एकाधिकारी पूंजी की अतिलाभ कमाने की अपने प्रयासों से पैदा होती है। टीटो गुट के विश्लेषण के अनुसार ऐसा लगता है कि एकाधिकार पूंजी दुनिया के फनर्बंटवारे के लिए जीवन–मौत के वैश्विक युद्व में कभी भी नहीं लगी थी। किसी भी तरीके से टीटो ग्रुप यह विश्वास नहीं करता कि मानवता का भविष्य पूंजीवादी व्यवस्था को समाजवादी व्यवस्था से अंततोगत्वा हटाकर ही है।

इसी प्रकार, यह संयुक्त राष्ट्र संघ के बारे में कहता है :

> ''संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए ठोस संभावना मौजूद है कि वह अंतर्राष्ट्रीय विवादों को हल करने तथा शांति की रक्षा में और बड़ी भूमिका तथा प्राधिकार हासिल करे। यह संगठन, मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय शत्रुता के कारण अपनी वर्तमान कमजोरियों के बावजूद जनवादी मैकेनिज्म का एक सक्रिय कारक बन सकता है जिसका कार्य न सिर्फ युद्व को रोकना होगा बल्कि राष्ट्रों के बीच सार्वजनीन सहकार एवं सुलह समझौते को, यानी कि समूचे मानव समुदाय के और ज्यादा व्यापक एकीकरण को प्रोत्साहित करना और बढ़ावा देना होगा।'' (वही पृष्ठ .74)

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग का यह कार्यक्रम उस संयुक्त राष्ट्र संघ के बारे में प्रस्ताव करता है जो अमरीकी साम्राज्यवादियों के आधिपत्य में है। क्या टीटो ग्रुप अमरीकी साम्राज्यवादियों के आधिपत्य वाले संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्गत एकता कायम करने की बकवास नहीं कर रहा है?

टीटो ग्रुप यह घोषणा करता है कि वह समाजवाद के खेमे में नहीं है। तथाकथित गुटों के ऊपर होने की चिल्ल–पों करता है। गुटों के ऊपर रहने की वकालत करते हुए यह साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था के अंतर्गत सौदेबाजी करने के लिए उत्पीड़ित नव–स्वाधीन देशों के साथ मिलकर गुट निरपेक्ष आंदोलन खड़ा करने में साझीदार बनता है।

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस के पूर्णतया संशोधनवादी कार्यक्रम की चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने उसी समय सही मार्क्सवादी–लेनिनवादी दृष्टिकोण से आलोचना करते हुए अपने सैद्वान्तिक पाक्षिक पत्र ***हौंग की (Red Flag)*** के प्रवेशांक के एक लेख में लिखा था :

> ''... ... ... तथ्यों ने प्रदर्शित किया है **(1)** कि सोवियत संघ की अगुवायी में समाजवादी खेमे से और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग की कतारों से बाहर रहने का मकसद क्रांतिकारी सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के स्थान पर प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी राष्ट्रवाद को प्रतिस्थापित करने से कम कुछ भी नहीं हैऋ और **(2)** कि इसकी ''गुटों के ऊपर रहने'' की तथाकथित अवस्थिति साम्राज्यवादी गुट की जरूरतों के अनुसार अपने को ढालने के अलावा कुछ नहीं है।
>
> '' **(3)** युद्व या शांति के सवाल पर, मार्क्सवादियों ने हमेशा यह रुख अपनाया है कि आधुनिक युद्वों का मूल कारण एकाधिकारी पूंजीवाद, यानी कि साम्राज्यवाद है और कि समाजवादी देश और तमाम देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां विश्व शांति की रक्षा करने वाली शक्तियों की कोर हैं। लेकिन टीटो गुट सोवियत संघ की अगुवायी वाले समाजवादी खेमे के विरुद्व अपने हमले के अभियान पर केन्द्रित रहता है और साम्राज्यवादी खेमे की युद्वनीति के एक पैरोकार की तरह आचरण करता है। टीटो ने खुद घोषित किया है कि 'स्तालिन की अनमनीय और अवांछित धमकीभरी विदेश नीति के चलते, यह देखकर कि कूटनीतिक साधनों से वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने में असमर्थ हो जायेंगे, तो बड़ी पश्चिमी शक्तियों ने तय किया कि वे शक्ति प्रदर्शन के जरिये ऐसा करने में समर्थ हो सकेंगे। यह अटलांटिक संधि के गठन का, सैनिक गुट के निर्माण का बुनियादी कारण था
> ... ... ' (युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस में टीटो की रिपोर्ट)। साफतौर पर टीटो गुट ऐसे बेहूदा, घोर प्रतिक्रियावादी निष्कर्ष तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा है कि : युद्व का खतरा साम्राज्यवादी व्यवस्था और संयुक्त राज्य अमरीका के नेतृत्व में साम्राज्यवादी खेमे से नहीं बल्कि समाजवादी व्यवस्था और सोवियत संघ के नेतृत्व में समाजवादी खेमे से पैदा होता है।
>
> ''**(4)** जैसा कि लेनिन द्वारा वैज्ञानिक तौर पर विश्लेषण किया गया है, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की अंतिम अवस्था है और इसके साथ, मानवता सर्वहारा क्रांति के युग में प्रवेश कर गयी है। अक्टूबर क्रांति के समय से अनेक देशों में सर्वहारा क्रांति विजयी हुई हैं। लेकिन साम्राज्यवाद अभी भी पूर्णतया परास्त नहीं हुआ है। सर्वहारा क्रांति का युग अभी भी समाप्त नहीं हुआ है। तब भी, टीटो गुट के अनुसार, आज का विश्व साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति की अवस्था से बाहर जा चुका है क्योंकि 'पूंजीवादी व्यवस्था अपने शास्त्रीय रूप में अधिकाधिक अतीत की वस्तु बनती जा रही है' और पूंजीवादी देशों में समाजवाद अस्तित्व में आ रहा है। टीटो गुट ''अवस्था'' **(Age)** शब्द पर निम्न तरीके से चिल्ल–पों मचाता है : 'मानवता अपराजेय तरीके से व्यापक किस्म के भिन्न–भिन्न रास्तों से समाजवाद की अवस्था में, एक ऐसी अवस्था में जहां समाजवाद और समाजवादी सम्बन्ध समूची मानवता के रोजमर्रा के जीवन की अधिकाधिक अंतर्वस्तु और तरीके बन गये हैं, यह अवस्था जिसमें आज मानवता रह रही है, वह पहले से ही, किसी भी बात से अधिक, ऐसी अवस्था है जिसमें वह समाजवादी आर्थिक सम्बन्धों के आधार पर नये सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूपों से परिचित हो रही है, अपना रही है और मजबूत कर रही है।' इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि 'समाजवादी चिंतन का अब बुनियादी सरोकार फरानी, पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने सम्बन्धी सवालों से नहीं रह गया है।' दूसरे शब्दों में, दुनिया के विभिन्न देशों में पूंजीवादी व्यवस्था को नष्ट करने की समस्या अब नहीं मौजूद है, सर्वहारा क्रांति का सिद्वान्त 'फराना' पड़ गया है, और यह अब तथाकथित 'जड़सूत्रवादियों' के चिंतन की कपोल–कल्पना के सिवाय और कुछ नहीं रह गया है।
>
> '' **(5)** लेनिन के अनुसार, एकाधिकारी पूंजीवाद 'प्रत्येक जगह प्रभुत्व की, न कि स्वतंत्रता की, जद्दोजहद करता है। इसका परिणाम समग्र रूप से प्रतिक्रियावाद होता है, चाहे जो भी राजनीतिक व्यवस्था हो और इस क्षेत्र में भी मौजूद शत्रुताओं का घोर सघनीकरण होता है।' लेकिन टीटो गुट के अनुसार, पूंजीवादी देशों में राज्य पूंजीवाद के रूप के जरिये एकाधिकारी पूंजी शांतिपूर्ण तरीके से समाजवाद में विकसित हो रही है और इन देशों में राज्य पूंजीवाद वस्तुतः 'समाजवाद' है। यह कहता है कि पूंजीवादी देशों में, 'राज्य अधिकाधिक पूंजी की गतिविधियों को नियंत्रित करता है, पूंजीवादी सम्पत्ति के निजी प्रबन्धन के अधिकार को आंशिक तौर पर सीमित करता है और अर्थव्यवस्था व समाज में निजी पूंजी के मालिकों को कुछ स्वतंत्र कार्यकलापों से वंचित करता है।' 'गतिविधियों के कुछ क्षेत्रों में बड़े एकाधिकारी घेरे अपनी पहले वाली पूर्णतया स्वतंत्र भूमिका को तेजी के साथ खोते जा रहे हैं, जबकि एकाधिकारियों के कुछ कार्य अधिकाधिक राज्य को हस्तांतरित होते जा रहे हैं'। 'अर्थव्यवस्था में राज्य ने महत्वपूर्ण भूमिका ग्रहण कर ली है।' 'श्रम और सम्पत्ति सम्बन्धों के, सामाजिक अधिकारों और सामाजिक सेवाओं के और अन्य सामजिक सम्बन्धों के क्षेत्र में राज्य की भूमिका भी बढ़ी है।'
>
> टीटो गुट के असाधारण तर्क इस तरह चलते हैं : एकाधिकार पूंजी की राज्य मशीनरी एकाधिकार पूंजी की सेवा नहीं करतीऋ यह वर्गों से ऊपर है और सम्पत्तिहरण करने वाली एकाधिकार पूंजी के कार्यभारों को पूरा नहीं करती।
>
> '' **(6)** इस प्रकार, टीटो गुट यह कहता है कि पूंजीवादी देशों का मजदूर वर्ग पूंजीवादी राज्य मशीनरी को चकनाचूर किये बिना ही 'समाज की सेवा में राज्य मशीनरी को लगा' सकता है। इस तरह पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग का कार्यभार 'राज्य सत्ता में निर्णायक प्रभाव हासिल करने तथा क्रमशः – अपनी राजनीतिक ताकत को ध्यान में रखते हुए–समाजवाद का विकास हासिल करने' तक सीमित है।

'' **(7)** चूंकि टीटो गुट हर तरीके से पूंजीवादी तानाशाही को महिमामंडित करता है, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह सर्वहारा अधिनायकत्व को बदनाम करने में अपना जोर लगाता है। तमाम प्रतिक्रियावादियों की तरह बोलते हुए यह आरोप लगाता है कि सर्वहारा अधिनायकत्व अवश्यमभावी तौर पर 'नौकरशाही' और 'नौकरशाह राज्यवाद' की ओर जायेगा।

'' **(8)** मार्क्सवादी इस बात को स्वीकार करते हैं कि समाजवादी स्वामित्व के दो रूप होते हैं यानी कि समूची जनता का स्वामित्व और सामूहिक स्वामित्व, और कि समूची जनता का स्वामित्व समाजवादी स्वामित्व का उच्चतर रूप होता है। लेकिन टीटो गुट समाजवादी देशों में समूची जनता के स्वामित्व को, यानी राज्य के स्वामित्व को ''राज्य पूंजीवाद'' तथा 'फराने सामाजिक सम्बन्धों की अंतिम प्रतिध्वनि' के बतौर वर्णन करता है। यह कहता है कि समाजवादी अर्थव्यवस्था में सिर्पफ दो किस्म के स्वामित्व होते हैं– 'सामूहिक स्वामित्व' और 'निजी स्वामित्व'। 'सामूहिक स्वामित्व' से इसका मतलब है कि प्रत्यक्ष उत्पादकों को 'उत्पादों के पैदा करने और वितरण के सम्बन्ध में' फैसला लेने में इजाजत देना। यह गुट और बढ़कर दावा करता है कि 'निजी भू–धारण' 'बड़े पैमाने के समाजवादी कृषि उत्पादन का आवश्यक हिस्सा हैं,' और कि छोटे सम्पत्तिधारी भी 'समाजवाद की सामाजिक–आर्थिक शक्तियों के एक आवश्यक हिस्से' का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संक्षेप में, टीटो गुट पूंजीवादी देशों के राज्य पूंजीवाद को 'समाजवाद' के बतौर तथा समाजवादी देशों में समूची जनता के मालिकाने को 'राज्य पूंजीवाद' के बतौर चित्रित करता है। यह पहले वाले के पक्ष में है और बाद वाले के विरोध में। टीटो ब्राण्ड का 'समाजवाद' समूची जनता के ऊपर सामूहिक को ओर बदले में सामूहिक से ऊपर निजी को रखता है। इसका नारा है कि 'समाजवाद' मनुष्य की निजी खुशी को किसी किस्म के 'उच्चतर उद्देश्यों' के अधीन नहीं कर सकता। इसका तर्क है कि व्यक्ति के हित सामूहिक हितों और समूची जनता के हितों से ऊपर हो सकते हैं लेकिन उसे इनके अधीन नहीं होना चाहिए, और कि निश्चित तौर पर सामूहिक हित समूची जनता के हितों से ऊपर हो सकते हैं और उन्हें बाद वाले के अधीन नहीं होना चाहिए।

'' **(9)** टीटो ब्राण्ड का 'समाजवाद' इतनी घृणास्पद है कि वस्तुतः यह पूंजीपति वर्ग का 'समाजवाद' है, यह उस किस्म का 'समाजवाद' है जो साम्राज्यवादियों के लिए सहनीय है। यह उस समाजवाद से बुनियादी तौर पर भिन्न है जो मार्क्सवाद–लेनिनवाद द्वारा परिभाषित है तथा जिसे समाजवादी देशों द्वारा अमल में लाया गया है। इसमें कोई ताज्जुब नहीं है कि टीटो गुट समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण के आम नियमों को खुलेआम खारिज करता है, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की समान विचारधारा एवं साझी कार्यवाहियों के विरुद्व अपने को खड़ा करता है और इस समान विचारधारा तथा साझी कार्यवाही को 'विचारधारात्मक एकाधिकार' व 'राजनीतिक प्रभुत्व' के बतौर घृणात्मक तरीके से कुत्सा प्रचार करता है।

'' **(10)** ऊपर बताये गये विचारों से संचालित टीटो गुट तमाम कम्युनिस्ट पार्टियों का विरोधी है। यह घोषणा करता है,'कम्युनिस्ट पार्टियों की यह अवधारणा कि समाजवाद के प्रति समाज के आंदोलन के प्रत्येक पहलू पर उनका एकाधिकार है और कि समाजवाद उनके भीतर ही अपने प्रतिनिधि पा सकता है तथा उनके जरिये ही आगे बढ़ सकता है□सिद्वान्ततः गलत है तथा व्यवहारतः अत्यन्त नुकसानदेह है।' यह दावा भी करता है 'कुछ कम्युनिस्ट पार्टियां अपने–अपने देशों के सामाजिक विकास में क्रांतिकारी सृजनात्मक कारक तथा चालक शक्ति के बतौर कार्य करना बंद कर चुकी हैं।'

... ...

'' **(11)** टीटो गुट का विचार है कि 'विगत कुछ दशकों के दौरान अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन का विकास सामाजिक घटनाओं तथा भौतिक दशाओं के विकास के साथ कदम मिलाकर आगे नहीं बढ़ा है'ऋ और कि 'स्तालिन के अंतिम कुछ वर्षों के दौरान दुनिया का मजदूर आंदोलन ... ... न सिर्फ ठहरावग्रस्त हो गया है बल्कि पीछे की ओर भी चला गया है।'

महान अक्टूबर क्रांति की विजय, सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण की सफलता, फासीवाद के विरुद्व युद्व में मिली महान विजयें जिसमें सोवियत संघ ने मुख्य भूमिका निभायी थी, नये समाजवादी देशों की मौजूदगी, पूंजीवादी देशों में मजदूर आंदोलन में वृद्वि, और चीनी क्रांति व चीन के लोक गणतंत्र के प्रति टीटो गुट अंधेपन का शिकार लगता है।

'' **(12)** टीटो गुट का विचार है कि 'विगत कुछ दशकों के दौरान मार्क्सवादी विचार समसामयिक समाज के विकास के साथ कदम मिलाकर नहीं बढ़ सके।' जैसा कि रेनमिन रिबाओ (जन दैनिक) के **5** मई, **1958** के सम्पादकीय में बताया गया है कि टीटो गुट मार्क्सवादी–लेनिनवादी क्रांतिकारी सिद्वान्त के बुनियादी उसूलों को 'जड़सूत्रवाद' के बतौर लेबुल लगाता है जबकि खुद को 'जड़सूत्रवाद का समझौताहीन दुश्मन' बताता हैऋ ऐसा होने पर, इसके लिए यह समझना कैसे संभव है कि मार्क्सवाद का विकास हुआ है या नहीं? चूंकि अक्टूबर क्रांति के बाद से कम्युनिस्ट पार्टियों के नेतृत्व में होने वाली दुनिया की महान घटनाओं को यह नहीं देखता, और तथाकथित 'जड़सूत्रवाद' का विरोध करने व 'व्यवहारिक संशोधन' के बहाने 'मानवता', 'मनुष्य का व्यक्तित्व', 'स्वतंत्र व्यक्तित्व', 'सामाजिक प्राणी के बतौर मनुष्य के बारे में सच्चाई' और 'मनुष्य की आत्मिक संरचना' के बारे में ऐसी प्रतिक्रियावादी बकवास करता है तो इस गुट की मार्क्सवाद–लेनिनवाद के साथ समान भाषा होना कैसे संभव है?'' (From " Yugoslav Revisionism-Product of Imperialist Policy by Chen-Po-Ta, Page-380-85; The Documents Of the Great Debate, Vol-I, Antararashtriya Prakashan, Sharanpur, 2005, अनुवाद हमारा)

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग की सातवीं कांग्रेस में उसका संशोधनवादी कार्यक्रम समग्रता में आ चुका था, हालांकि वह इस पर अमल पहले ही कर चुकी थी। युगोस्लाविया में पूंजीवादी पुर्नस्थापना की दिशा में वह पहले ही बढ़ चुकी थी। टीटो गुट अमरीकी साम्राज्यवादियों का इतना शुक्रगुजार था कि इस तथाकथित मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टी के समूचे कार्यक्रम में मौजूदा विश्व परिस्थिति के विश्लेषण में अमरीकी साम्राज्यवाद की मौजूदगी का जिक्र तक नहीं था। यह अमरीकी डॉलर की मदद के सामने इतना नतमस्तक था कि विश्व सर्वहारा व मेहनतकश जनता के सबसे बड़े व खतरनाक शत्रु के चरित्र की चर्चा करना तक मुनासिब नहीं समझता था।

टीटो गुट अपने संशोधनवादी रास्ते पर इतना आगे बढ़ चुका था कि अब उसको पीछे वापस मार्क्सवादी–लेनिनवादी धारा में लौटाने के प्रयासों को असफल होना था। वह अपने संशोधनवादी कार्यक्रम पर अविचल होकर बढ़ रहा था। लेकिन वह मार्क्सवादी शब्दाडंबर के इस्तेमाल को भी नहीं छोड़ सकता था। उसने सातवीं कांग्रेस में ही घोषणा की कि 'किसी भी हिस्से में यदि यह उम्मीद हो कि अंतर्राष्ट्रीय व घरेलू दोनों मसलों पर हम अपने सैद्वान्तिक नजरिए को त्याग देंगे तो यह महज समय की बर्बादी है।'

IV पूंजीवादी पुनर्स्थापना के परिणाम

युगोस्लाविया का राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष युगोस्लावियावी देश भक्ति जागृत करके हुआ था। राष्ट्रीय मुक्ति के बाद स्लोवेनिया, क्रोएशिया, बोस्निया–हर्जेगोविना, मैसेडोनिया, मोण्टेनेग्रो और सर्बिया गणराज्यों तथा बोज्दोवीना व कोसोवो स्वायत्तशासी प्रांतों से मिलकर संघीय गणराज्य के बतौर युगोस्लाविया अस्तित्व में आया था। इसमें कोसोवो की अल्बानियाई आबादी को छोड़कर सभी स्लाव जातियां थी। राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति के पहले ये राष्ट्रीयतायें सभी सर्बियाई अधिपत्य के विरुद्व थीं। राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति में ''भाईचारा और एकता'' का नारा अत्यंत कारगर साबित हुआ था। लेकिन युगोस्लाविया के शासक गुट द्वारा पूंजीवादी रास्ता अख्तियार कर लेने के बाद इन अलग–अलग

राष्ट्रीयताओं के अंतर्विरोध फिर उभरने लगे। शुरुआती दौर में, ''मजदूरों की परिषदों'' और स्व–प्रबन्धन की योजना को लागू करने में युगोस्लावियावी मजदूर वर्ग को धोखा देने में टीटो शासक गुट को कुछ सफलताएं जब मिलीं तो इसने और आगे कदम बढ़ाते हुए खेती का निजीकरण करने तथा स्वतंत्र किसानों को ट्रैक्टर व मशीनरी रखने का अधिकार देकर अपना पूंजीवादी अभियान शुरू कर दिया। स्व–प्रबन्धन के अंतर्गत आने वाले उद्यमों में मुनाफे को अधिकाधिक करने की छूट दी गयी। बाजार की शक्तियों को मुक्त करने की ओर यह व्यवस्था गयी। व्यापार को निजी हाथों में देने के अलावा ठेकेदारी के संघटन कायम करने की छूट दी गयी। निजी उद्यमियों को मजदूरों और संसाधन इकट्ठा करने की इजाजत दी गयी। आगे के कुछ वर्षों के बाद व्यक्तियों को निजी फ्रलैट व मकान खरीदने की छूट भी मिल गयी। संविधान के मुताबिक एक व्यक्ति तीन मकान तक रख सकता था। संविधान में निजी सम्पत्ति के उत्तराधिकार की गारण्टी दी गयी। (**1974** के संविधान की **194**वीं धारा)। एक तरफ, ''स्व–प्रबन्धन'' के तहत उद्योगों को मुनाफे के लिए चलाया जा रहा था और दूसरी तरफ निजी क्षेत्र को अलग से खड़ा किया जा रहा था। स्व–प्रबन्धन के क्षेत्र में पहले स्थानीय कम्यूनों को निर्णय लेने में ज्यादा अधिकार दिये गये थे, बाद में गणतंत्रों या स्वयत्तशासी प्रांतों को ये अधिकार मिल गये थे। केन्द्रीय योजना को पहले ही तिलांजली दी जा चुकी थी।

इससे अलग–अलग वर्गों के बीच ही असमानता की खाई नहीं चौड़ी हुई, बल्कि अलग–अलग गणराज्यों व स्वायत्तशासी प्रांतों के बीच भी असमानता की खाई चौड़ी होती गयी। टीटो गुट के शासन काल के दौरान ही अलग–अलग गणराज्यों में असंतोष के स्वर उभरने लगे थे।

इसी के साथ ही, युगोस्लाविया के मजदूर वर्ग की राजनीतिक नेतृत्वकारी भूमिका से क्रमशः हटा दिया गया था। हिरावल वर्ग की इसकी भूमिका को बदलकर इसे महज एक श्रमिक के रूप में तब्दील कर दिया गया था। जैसे कि युगोस्लाविया में प्रचलित इस उक्ति में कहा गया है : '' हमें उत्पादों के लिए नहीं बल्कि पूंजी और श्रम के लिए बाजार की जरूरत है।'' अतः समाजवाद के थोड़े दिनों के दौरान मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका के स्थान पर अब उसे समस्या के बतौर में देखा जाने लगा था। जैसा कि स्तालिन ने कहा है कि ''प्रत्येक चीज का चरित्र उसकी अंतर्वस्तु से तय होता है, जो वह किसी रूप पर रखती है। सभी सांगठनिक रूप, राजनीतिक, आर्थिक महज सांगठनिक रूप ही रखते हैं। सवाल है कि उसको चलाने में कौन नेतृत्व करता है।'' कम्यून का राजनीतिक रूप, सार्वजनिक स्वामित्व के रूप, 'स्व–प्रबन्धन' के रूप और 'मजदूरों की परिषद' के रूपों का सारतत्व पूंजीवादी हो चुका था और मजदूर वर्ग को महज उत्पादन के औजार की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था और यह दिनोंदिन बढ़ता जा रहा था। इसी से, पहले अलग–अलग गणराज्यों की कम्युनिस्ट लीग के नेतृत्व में राष्ट्रीय साधन स्रोतों पर उसी गणराज्य के अधिकारों की मांग उठने लगी जो बाद में बढ़कर इसके लिए व्यापक समर्थन पाने का आधार बन गयी।

इसने यह भी दिखा दिया कि समाजवादी आधार पर ही बहु–राष्ट्रीय देश की राष्ट्रीयता की समस्या को हल किया जा सकता है। जैसे ही युगोस्लाविया पूंजीवादी आधार की ओर गया तो दोनों ही तरह के क्षेत्रों में–विकसित और पिछड़े हुए–असंतोष के स्वर उभरना शुरू होने लगे थे।

पूंजीवादी रास्ते पर चलते हुए युगोस्लाविया के अलग–अलग गणराज्यों के बीच असमानता बढ़ती गयी थी। क्रोएशिया और स्लोवेनिया, जो सबसे सम्पन्न इलाके थे उनकी तुलनात्मक स्थिति **1953** से **1961** के बीच बेहतर हुई, जबकि सबसे पिछड़े इलाके– बोस्निया–हर्जेगोविना और कोसोवो– की स्थिति और खराब हुई। **1961** के बाद बोस्निया–हर्जेगोवीना और कोसोवो की सापेक्ष स्थिति और भी खराब होती गयी। **1980** के दशक तक युगोस्लाविया की अर्थव्यवस्था गम्भीर संकट में जा चुकी थी। क्षेत्रीय असमानता और भी अधिक बढ़ चुकी थी। प्रति व्यक्ति आय के आधार पर स्लोवेनिया की आय समूचे युगोस्लाविया की औसत आय का लगभग दो गुना हो गयी थी। क्रोएशिया की प्रति व्यक्ति आय औसत से लगभग **25** प्रतिशत ज्यादा थी। सर्बिया की आय लगभग औसत के बराबर थी। मोण्टेनेग्रो की प्रति व्यक्ति आय समूचे युगोस्लाविया की औसत आय की **74** प्रतिशत थी। मैसेडोनिया की **63** प्रतिशत और कोसोवो की **27** प्रतिशत थी। स्लोवेनिया और क्रोएशिया की आबादी समूची युगोस्लाविया की महज **30** प्रतिशत थी, जबकि संघीय टैक्स राजस्व में उनका हिस्सा **50** प्रतिशत था।

स्लोवेनिया और क्रोएशिया के नेतृत्व को लगता था कि वे पिछड़े इलाकों का बोझ ढो रहे हैं। इस वजह से वे अपने यहां समृद्वि नहीं ला पा रहे हैं तथा पिछड़े इलाकों के नेतृत्व को लगता था कि संघीय राज्य उनके विकास पर उचित ध्यान नहीं दे रहा है। सभी गणराज्यों का नेतृत्व पूंजीवादी तर्क से आचरण कर रहे थे। संघीय ढांचे में दरारें पड़ने लगी थी। सर्व युगोस्लावी राष्ट्रवाद का स्थान अलग–अलग संघों का राष्ट्रवाद लेता जा रहा था। पूंजीवादी रास्ते की स्वाभाविक परिणति सामने आ रही थी। संघीय राज्य को अब यह समझा जाने लगा कि वह सर्बिया के प्रभुत्व वाला राज्य है।

गहराते अर्थिक संकट से निपटने के लिए **1970** के दशक में युगोस्लाविया ने विदेशों से भारी कर्ज लिया था। बेरोजगारी आसमान छू रही थी और लगातार बनी हुई थी। मुद्रास्फीति की दर **1989** तक **1000** प्रतिशत तक पहुंच गयी थी। इस समय तक अलग–अलग गणराज्यों में राष्ट्रवादी ताकतें अलग होने की मांग को लेकर आगे बढ़ चुकी थीं।

पूंजीवादी ताकतें काफी पहले से ही समय–समय पर दो पार्टी व्यवस्था की मांग कर रही थीं। मई, **1965** में स्लोवेनिया के एक अखबार परस्पेक्टिव ने दो–पार्टी व्यवस्था की मांग कर डाली थी। इस अखबार को निकालने वाले कम्युनिस्ट लीग के प्रमुख लोगों के बेटे थे। इसी प्रकार, क्रोएशिया में, **1970** के दशक में संसाधनों के बंटवारे को लेकर सवाल उठने लगे थे। टीटो गुट एक तरफ तो समग्र युगोस्लावियावी राष्ट्रवाद के दैत्य को बढ़ावा दे चुका था, दूसरी तरफ वह अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के राष्ट्रवाद के विरुद्व कठोर कदम उठा रहा था। **1972** में उसने अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के उठने वाले राष्ट्रवाद के विरुद्व कदम उठाये तथा अपने भाषणों में इस तरह के राष्ट्रवाद की निंदा की। उसने कहा :

> ''राष्ट्रवाद मजदूर वर्ग के दुश्मन, समाजवाद के और कम्युनिस्टों की लीग के दुश्मन, स्व–प्रबन्धन व हमारी प्रगति के दुश्मन के संघर्ष का एक रूप है।'' **(Speech by The President of the Republic, Josip Boroz Tito, on 10th of sept. 1972)**

एक तरफ, टीटो अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के राष्ट्रवाद पर प्रहार कर रहा था, वहीं दूसरी तरफ अपने को अनिश्चित काल के लिए युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग का अध्यक्ष तथा संघीय विधान सभा का आजीवन अध्यक्ष घोषित करवा रहा था। राष्ट्रवाद से निपटने के लिए उसने युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग को अलग–अलग राष्ट्रीयताओं की कम्युनिस्ट लीग में बदलने तथा उनको लेकर संघीय कम्युनिस्ट लीग बनाने की योजना लागू की। इसी के साथ ही अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के लोगों को बारी–बारी से देश की संघीय सरकार के मुखिया के पद पर बैठाने की चाल चली। लेकिन राष्ट्रवाद के जिस दैत्य को उसने खड़ा किया था और जिस नारे को इस्तेमाल करते हुए उसने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का विरोध किया था तथा तथाकथित गुटों से ऊपर रहने की बात की थी, वही राष्ट्रवाद का दैत्य संघीय युगोस्लाविया के लिए भस्मासुर बन कर आ उपस्थित हुआ था।

बढ़ते आर्थिक संकट ने इस भस्मासुर को और ज्यादा ताकत दे दी थी। अस्सी के दशक के अंत तक आते–आते विदेशी कर्ज **20** अरब डॉलर के आस–पास पहुंच चुका था। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने उस पर कठोर शर्तें लगा दी थीं।

अब अमरीकी साम्राज्यवादियों के लिए युगोस्लाविया की सोवियत खेमे से हिफाजत करने का बहाना नहीं रह गया था। युगोस्लाविया की संघीय एकता उसके लिए समस्या ही पैदा कर सकती थी।

इसलिए अब अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के नेतृत्व द्वारा संघ से अलग होने की मांग उसके लिए अपने प्रभाव को और ज्यादा बढ़ाने तथा प्रभुत्व स्थापित करने का बेहतर अवसर हो गया था। उसने दक्षिणी–पूर्वी यूरोप के इस हिस्से में युगोस्लाविया के विघटन से अपना फायदा देखा और युगोस्लाविया के टुकड़े–टुकड़े करने में अलग–अलग राष्ट्रीयताओं की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के साथ खड़ा होकर भयंकर कत्लेआम करा के अपनी भूमिका निभायी। उसके इस आपराधिक कृत्य में नाटो और संयुक्त राष्ट्र संघ भी हिस्सेदार थे।

V युगोस्लावियाई संशोधनवाद के कारण और उसके सबक

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी (बाद में लीग) का कम्युनिस्ट पार्टी से संशोधनवादी पार्टी में तब्दील होने की ऊपर चर्चा की गयी है। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का तेजी से विकास फासीवादी कब्जे के दौरान छापामार युद्व लड़ते हुए हुआ था। **1941–45** के दौरान पिछड़े ग्रामीण इलाकों में छापामार सेना की कार्यवाहियों के समय कम्युनिस्ट कतारों की भी बड़े पैमाने पर भर्ती हुई थी। ये कतारें किसान समुदाय से आयी थीं। उस समय युगोस्लाविया की ग्रामीण आबादी करीब **75** प्रतिशत थी, जो खेती पर निर्भर थी। उस समय फासीवादी कब्जे के विरोध में राष्ट्रीय मुक्ति का कार्यभार मुख्य था। स्वाभाविक था कि बड़े पैमाने पर देशभक्त व जनवादी ताकतें छापामार सेना और कम्युनिस्ट पार्टी में आतीं। वहां का राष्ट्रीय मुक्ति युद्व चीन की तरह दीर्घकालीन नहीं था। दीर्घकालीन युद्व के दौरान वहां कम्युनिस्ट पार्टी को विचारधारात्मक–राजनीतिक सुदृढ़ीकरण का तुलनात्मक तौर पर ज्यादा मौका मिला था। जबकि युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी की व्यापक कतारों को इस सुदृढ़ीकरण का मौका ही नहीं था। इसी से जुड़ी बात यह है कि अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के बीच पहले से ही बहुत वैमनस्य था। वृहद् सर्बियाई राष्ट्रवाद के फरानी युगोस्लावियाई राज्य के आतंक तले ये राष्ट्रीयतायें रह चुकी थीं। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के ''भाईचारे और एकता'' के नारे ने उन्हें फासीवाद विरोधी युद्व में एकजुट किया था। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के समाजवाद व कम्युनिज्म के उसूल पर इन राष्ट्रीयताओं से व्यापक कतारों की भर्ती नहीं हुई थी। यह वह भौतिक जमीन थी जिसके तहत फासीवाद–विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति युद्व के दौरान युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का तेजी से विकास हुआ था। यह छोटी निजी सम्पत्ति वाले किसानों के देश में मौजूद भौतिक जमीन थी।

इसके अलावा, इस फासीवाद–विरोधी राष्ट्रीय मुक्तियुद्व के दौरान युगोस्लाविया की नयी बनी राष्ट्रीय मुक्ति सेना को फासीवाद विरोधी अन्य साम्राज्यवादी देशों की सेनाओं से (मित्र देशों की सेनाओं से) तालमेल व हथियार–गोलाबारूद मिल रहा था। इस भौतिक मदद का प्रभाव युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व पर पड़ रहा था। साम्राज्यवादी देश लगातार युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी और राष्ट्रीय मुक्ति सेना के नेतृत्व को प्रभावित कर रहे थे।

युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी, हालांकि फरानी थी। लेकिन उसको फराने युगोस्लाविया में निरंतर दमन का शिकार होना पड़ा था। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी के सांगठनिक उसूलों पर चलना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। वह तानाशाही काल में एक भूमिगत ढांचे के अधीन ही काम कर सकती थी। यही कारण था कि वह **1928** के बाद **1948** में ही अपनी कांग्रेस कर सकी थी। ऐसी भूमिगत पार्टी, जो अत्यन्त विषम परिस्थितियों में काम करती हो, के लिए जनवादी केन्द्रीयता के लेनिनवादी उसूल को अपनाना काफी मुश्किल होता है। लेकिन इसी से पार्टी के सांगठनिक उसूलों के प्रति लापरवाही बरतने व उसका उल्लंघन करने का दृष्टिकोण पैदा होता है। अगर ऐसा दृष्टिकोण पार्टी नेतृत्व के शीर्ष में मौजूद हो तो ऐसी पार्टी का लेनिनवादी पार्टी में बने रहना मुश्किल ही नहीं असम्भव हो जाता है। **1948** में, जब स्तालिन के नेतृत्व के समय सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने और बाद में कोमिन्फार्म ने युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की इस बात की आलोचना की थी कि वह षड्यंत्रकारी पार्टी की तरह आचरण कर रही है, और कि उसका नेतृत्व कतारों द्वारा चुना न हो कर स्वयंभू है तो यह आलोचना सही थी। लेकिन युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी ने इस आलोचना का जवाब देने के लिए **1948** की **5** वीं कांग्रेस आयोजित की थी। यह उसकी लेनिनवादी कार्यशैली के अंग के बतौर नहीं आयोजित की गयी थी क्योंकि इस कांग्रेस के बाद भी युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी लेनिनवादी सांगठनिक उसूलों के अनुसार नहीं कार्य कर रही थी। वह महज औपचारिक तौर पर लेनिनवादी सांगठनिक उसूलों को मान रही थी।

एक पिछड़े हुए व्यापक किसान आबादी वाले पूंजीवादी देश में फासीवादी कब्जे के विरुद्व राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति करने वाली कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में तथा कतारों के बीच राष्ट्रवादी भटकाव की मौजूदगी का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं लगती। विशेष तौर पर उस समय जब थोड़े ही समय में आशातीत सफलता मिल गयी हो। इस आशातीत सफलता के साथ, युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का राष्ट्रवादी भटकाव और बढ़ गया। युगोस्लावियावी समाज में राष्ट्रवादी विचारों के प्रभुत्व का आधार पहले से ही मौजूद था। द्वितीय विश्व युद्व के बाद पूर्वी यूरोप के देशों में जनता के जनवादी राज्य कायम हो गये थे। सभी ने समाजवाद स्थापित करने का लक्ष्य सामने रखा था। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी समाजवाद के निर्माण का लक्ष्य राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति के बाद रखा था। लेकिन जैसे ही बड़े उद्योगों व बैंकों तथा वाणिज्य के राष्ट्रीयकरण से आगे बढ़ कर कृषि के सामूहिकीकरण करने का कार्यभार सामने आया तो ये उससे पीछे हटने लगे। सोवियत संघ ने जब अन्य बातों के अलावा इसकी आलोचना की तो बिरादराना आलोचना न समझ कर इसे युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी और राज्य की आलोचना समझा जाने लगा। युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व इस कदर बौखला गया कि उसने सोवियत समाजवादी राज्य के चरित्र को पूंजीवादी राज्य के समतुल्य रखना शुरू कर दिया। उसने दोनों के बीच के बुनियादी विरोधी चरित्र को भुला दिया। इसी समय टीटो गुट ने अमरीकी साम्राज्यवदियों के साथ अच्छे रिश्ते बनाने की पहल ले ली थी। चूंकि युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर विचारधारात्मक–राजनीतिक संघर्ष चलाने की परम्परा नहीं थी। उसका शीर्ष नेतृत्व राजा की तानाशाही के दौर में एक अपेक्षाकृत छोटा समूह था, जो आपस में अनौपचारिक बातचीत से सारी चीजें तय करता था और क्रांति के बाद भी वही परम्परा चल रही थी, अतः विचारधारात्मक मसलों पर यह मार्क्सवादी–लेनिनवादी दृष्टिकोण को अन्य भटकावों से अलग करने में कोई जद्दोजहद नहीं कर रहा था। अब राष्ट्रवादी भटकाव की अभिव्यक्ति किसी कम्युनिस्ट पार्टी के सत्ता में आने के थोड़े ही समय बाद अगर इतने तीखे ढंग से होने लगे तो इसके कारण को खुद युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी और युगोस्लावियाई समाज के भीतर ही देखना होगा।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने इस राष्ट्रवादी भटकाव का इस्तेमाल किया तथा युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के इस राष्ट्रवादी भटकाव ने उसे पहले अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन से बाहर किया तथा बाद में यह उसे पूंजीवाद की फनर्स्थापना करने की ओर ले गया।

युगोस्लाविया के टीटो गुट को कोमिन्फार्म से बाहर करने के बाद वह पूंजीवादी रास्ते की तरफ जा सकता था। इसके लिए उसने सैद्वान्तिक सूत्रीकरण करना शुरू किया। उसे पहले सोवियत संघ के समाजवाद को बदनाम करना था। वह स्तालिन के नेतृत्व में समाजवादी समाज को नौकरशाही से ग्रस्त समाज कहने लगा। उसने फिर एक और 'अविष्कार' किया– प्रत्यक्ष उत्पादकों के हाथ में उद्यमों के प्रबन्धन

का। उद्यमों के स्व–प्रबन्धन के बासी पड़ चुके पूंजीवादी नुस्खे को उसने समाजवाद का युगोस्लावियाई रास्ता कहना शुरू किया। दरअसल उसकी यह सारी कसरत एक तरफ तो सही समाजवाद को बदनाम करने की थी और दूसरी तरफ इस सैद्वान्तिक सूत्रीकरण के जरिए वह देश के भीतर अपने राष्ट्रवादी सामाजिक आधार को संतुष्ट कर सकता था तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्राज्यवादियों विशेष तौर पर अमरीकी साम्राज्यवादियों के स्वार्थों की पूर्ति कर सकता था। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह पार्टी मार्क्सवादी–लेनिनवादी परम्परा में विकसित हुई थी, इसलिए इसे अपने सारे मार्क्सवाद–लेनिनवाद विरोधी कदमों को मार्क्सवाद–लेनिनवाद के आवरण में ही उठाना था। यदि यह पूंजीवादी राष्ट्रवाद के नारे के अंतर्गत यह सारे कदम उठाता तो कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर और मजदूर व मेहनतकश आबादी के भीतर इसका विरोध हो सकता था तथा इसकी साख गिर सकती थी। इसलिए यह बेरोकटोक होकर पूंजीवादी ढर्रे पर उस समय नहीं जा सकता था। यदि युगोस्लाविया की व्यापक आबादी के भीतर, विशेष तौर पर मजदूर वर्ग और व्यापक मेहनतकश आबादी के भीतर कम्युनिस्ट पार्टी की साख गिर जाती तो इसका सत्ता में बने रहना असंभव हो जाता।

टीटो गुट मार्क्सवाद–लेनिनवाद से गद्दारी करके, उसकी क्रांतिकारी आत्मा को उससे निकाल कर उसे साम्राज्यवादियों व पूंजीपतियों के लिए स्वीकार्य करने लायक बनाकर अपने पूंजीवादी फनर्स्थापना के काम को क्रमशः अंजाम दे सकता था। अपने संशोधनवाद को सही मार्क्सवाद–लेनिनवाद बताने के लिए उसने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन को ''जड़सूत्रवादी'' कहना शुरू कर दिया। उसने यह फेरी लगाना शुरू कर दिया कि अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में प्रभावी ''जड़सूत्रवाद'' मार्क्सवाद–लेनिनवाद को विकृत कर रहा है। इस कुत्सा प्रचार के जरिये वह युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट लीग के अंदर सही मार्क्सवादी–लेनिनवादियों पर दमनात्मक कार्यवाही करके पूंजीवाद की फनर्स्थापना के अपने प्रयासों को तेज कर सकता था और उसने ऐसा ही किया।

जिस समय टीटो गुट युगोस्लाविया में पूंजीवादी फनर्स्थापना की दिशा में तेजी से बढ़ रहा था, देश और दुनिया में सोवियत संघ और समाजवाद के विरुद्व साम्राज्यवादियों के हमलों में सहभागिता कर रहा था, ठीक उसी समय सोवियत संघ में गद्दार ख्रुश्चोव कम्युनिस्ट पार्टी और राज्य सत्ता में काबिज हो गया। उसने वे सारे काम करना शुरू कर दिये जिन्हें टीटो गुट पहले से कर रहा था। इससे टीटो गुट द्वारा अपनाये जा रहे संशोधनवाद को और ज्यादा मदद मिली। ख्रुश्चोव द्वारा मार्क्सवाद–लेनिनवाद पर चौतरफा हमला बोल देने के बाद अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के बुनियादी उसूलों की शुद्वता की हिफाजत करने का संघर्ष और तेज हो गया।

ख्रुश्चोवी संशोधनवाद और टीटो गुट के संशोधनवाद के मूल अंतर्वस्तु एक ही थी। दोनों अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के हितों के विरुद्व पूंजीवाद की सेवा कर रहे थे। दोनों सोवियत संघ के समाजवादी राज्य और उसके नेता स्तालिन पर कीचड़ उछाल रहे थे। दोनों साम्राज्यवादियों विशेष तौर पर अमरीकी साम्राज्यवादियों के साथ सांठगांठ कर रहे थे। लेकिन इनमें एक अंतर था। ख्रुश्चोवी संशोधनवाद दुनिया के पहले समाजवादी देश में आया था। लेकिन युगोस्लाविया में संशोधनवाद एक ऐसे देश में आया था जो अभी हाल ही में समाजवाद की ओर कदम रख रहा था। ख्रुश्चोवी संशोधनवाद के आने के बाद यह और भी ज्यादा स्पष्ट होकर उजागर हो गया कि किसी भी देश में समाजवादी क्रांति सम्पन्न हो जाने और समाजवाद की स्थापना हो जाने के बाद भी वर्ग मौजूद रहते हैं, वर्ग अंतर्विरोध और वर्ग संघर्ष मौजूद रहता है। पूंजीवादी रास्ते और समाजवादी रास्ते के बीच जीवन–मरण का संघर्ष मौजूद रहता है। अभी यह सवाल तय नहीं होता कि अंतिम तौर पर समाजवाद विजयी हो गया है कि नहीं। पूंजीवाद फनर्स्थापना का खतरा मौजूद रहता है।

> ''युगोस्लाविया के टीटो गुट और ख्रुश्चोवी संशोधनवादी गुट के अनुभव से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि किसी समाजवादी देश में यह जरूरी नहीं कि बलात ताकत के जरिये ही या बाहरी साम्राज्यवादी आक्रमण के जरिये ही पूंजीवाद की फनर्स्थापना हो। यह उस देश के नेतृत्व के पतन के जरिये भी हो सकता है। स्तालिन ने बहुत पहले यह कहा था कि किले पर कब्जा करने का सबसे आसान तरीका भीतर से कब्जा करना होता है।
>
> ''इसी प्रकार, सर्वहारा वर्ग की पार्टी का पतित होकर पूंजीवादी पार्टी में तब्दील होने का कार्य जरूरी नहीं है कि सत्ता हथियाने से पहले ही हो, यह सत्ता हथियाने के बाद भी पूंजीवादी पार्टी में तब्दील हो सकती है और साम्राज्यवाद की चाकरी या उसके साथ सांठगांठ कर सकती है।
>
> '' यह युगोस्लाविया के संशोधनवाद से यह भी सबक मिलता है कि संशोधनवाद साम्राज्यवादी नीति की पैदाइश है। फराना संशोधनवाद श्रमिक अभिजात वर्ग को खरीदने और पालने–पोसने की साम्राज्यवादी नीति के परिणामस्वरूप पैदा हुआ था। आधुनिक संशोधनवाद भी उसी तरह पैदा हुआ है। कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार साम्राज्यवाद ने अब अपनी कार्यवाहियों का दायरा बढ़ा दिया है और वह समाजवादी देशों के नेतृत्वकारी गुटों को खरीद रहा है तथा उनके जरिये अपनी 'शांतिपूर्ण विकास' की वांछित नीति पर अमल कर रहा है। अमरीकी साम्राज्यवाद युगोस्लाविया को 'अगुवा भेड़' समझता है, क्योंकि उसने इस सिलसिले में एक मिशाल कायम की है। '' (महान बहस, अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन, **1998,** पृष्ठ **-140-41**)

इस तरह के कुछ सबक चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने ख्रुश्चोव गुट के साथ महान बहस के दौरान निकाले थे।

युगोस्लाविया का टीटो गुट सारतः पूंजीवादी राष्ट्रवाद पर चलते हुए युगोस्लाविया के संघ के विघटन के लिए पहले से ही जमीन तैयार कर चुका था। जिन अमरीकी साम्राज्यवादियों ने युगोस्लाविया के टीटो गुट को पाला–पोसा, उन्हीं अमरीकी साम्रज्यवादियों ने अलग–अलग राष्ट्रीयताओं के प्रतिक्रियावादी समूहों से मिलकर युगोस्लाविया के टुकड़े कर दिये। दक्षिणी स्लाव लोगों की सैकड़ों वर्षों की एक देश के रूप में संगठित होने की आकांक्षा और संघर्षों को प्रथम विश्व युद्व के बाद मूर्त रूप मिला था और बीसवीं सदी के अंत में यह अमरीकी साम्राज्यवादियों व नाटो व अन्य यूरोपीय साम्राज्यवादियों की साजिशों की भेंट चढ़कर टुकड़े–टुकड़े हो गया।

टीटो गुट के संशोधनवादी पापों की सजा युगोस्लाविया के मजदूर–मेहनतकश अवाम के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन को मिली।